सूअर पालन द्वारा जीविकोपार्जन

डॉ संजय कुमार,सहायक प्राध्यापक,

पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय,

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

भारत की जन संख्या जिस रफ़्तार से दिनों दिन बढ़ रही है और जीविकोपार्जन समस्या के रूप में उभर रही है , वैसे में पशुपालन गरीबी दूर करने में सफलता ला सकती है l सूअर पालन रोजगार के रूप में करने से अधिक लाभ हो सकता है l

पशुपालन में लगे लोग मांस, दूध, अंडा इत्यादि का उत्पादन बढ़ा सकते हैं l मांस का उत्पादन थोड़े समय में अधिक बढ़ने से सूअर पालन अत्यंत लाभदायक है l एक किलोग्राम मांस बनाने में अन्य पशुओं को १० से २० किलो भोजन देना पड़ता है वहीँ सुकर को ४ से ५ किलोग्राम ही देना पड़ता है l मादा सूअर ६ महीने में ही बच्चा दे देती है l इन्हें अच्छा भोजन मिलने से ६ महीने में ५० से ६० किलोग्राम वजन हो जाता है l बड़े सूअर साल में करीब एक टन खाद भी दे देते हैं l

सूकर पालन की शुरुआत कैसे करें ?

इस व्यवसाय की शुरुआत करने से पहले आवश्यक है कि इसकी पालन की पूरी जानकारी हो , सबसे पहले हमें अच्छी प्रजाति अपने छेत्र के अनुसार चुनना चाहिए , जिनमे निम्लिखित प्रजातिया प्रमुख है

सूकर की मुख्य प्रजातियाँ :

देश में सूकर की काफी प्रजातियाँ हैं लेकिन मुख्यतः सफेद यॉर्कशायर, लैंडरेस, हल्का सफेद यॉर्कशायर, हैम्पशायर, ड्युरोक, इन्डीजीनियस और घुंघरू अधिक प्रचलित हैं।

सफेद यॉर्कशायर सूकर:

यह प्रजाति भारत में बहुत अधिक पाई जाती है। हालांकि यह एक विदेशी नस्ल है। इसका रंग सफेद और कहीं-कहीं पर काले धब्बे भी होते हैं। कान मध्यम आकार के होते हैं जबकि चेहरा थोड़ा खड़ा होता है। प्रजनन के मामले में ये बहुत अच्छी प्रजाति मानी जाती है। नर सुअर का वजन 300-400 किग्रा. और मादा सुअर का वजन 230-320 किग्रा के आसपास होता है।

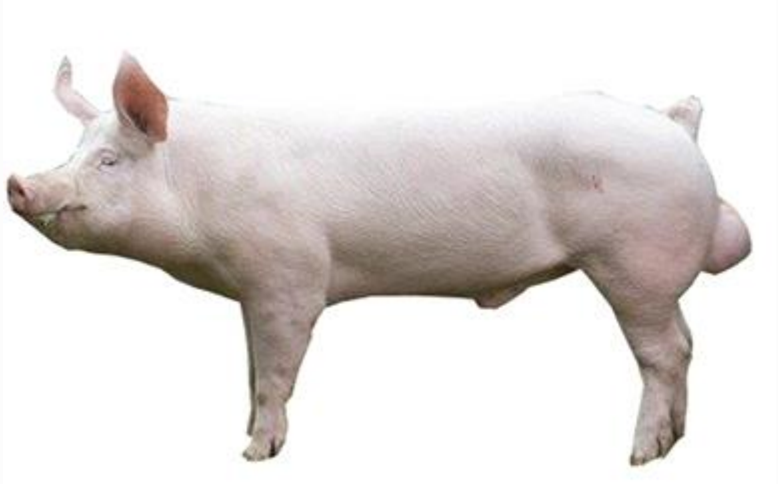

लैंडरेस सूकर :

इसका रंग सफेद, शारीरिक रूप से लम्बा, कान-नाक-थूथन भी लम्बे होते हैं। प्रजनन के मामले में भी यह बहुत अच्छी प्रजाति है। इसमें यॉर्कशायर के समान ही गुण हैं। इस प्रजाति का नर सुअर 270-360 किग्रा. वजनी होता है जबकि मादा 200 से 320 किग्रा. वजनी होती है।

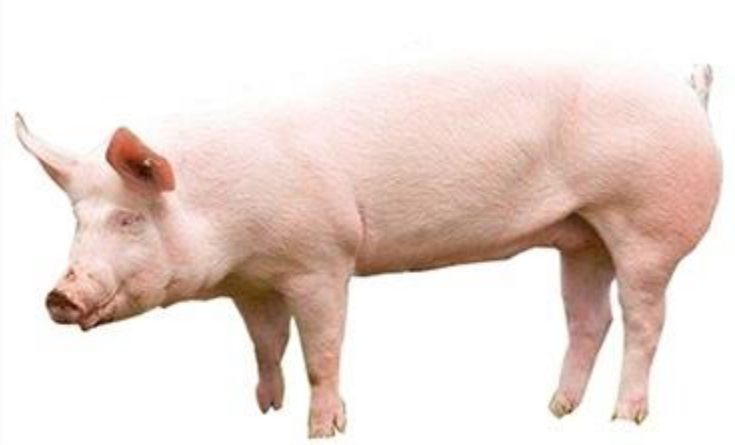

हैम्पशायर सूकर :

इस प्रजाति के सुअर मध्यम आकार के होते हैं। शरीर गठीला और रंग काला होता है। मांस का व्यवसाय करने वालों के लिए यह बहुत अच्छी प्रजाति मानी जाती है। नर सुअर का वजन लगभग 300 किलो और मादा सुअर 250 किग्रा. वजनी होती है।

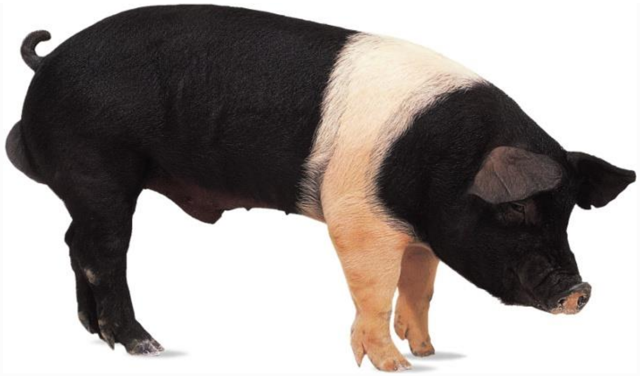

घुंघरू सूकर :

इस प्रजाति के सूकर पालन अधिकतर उत्तर-पूर्वी राज्यों में किया जाता है। खासकर बंगाल में इसका पालन किया जाता है। इसकी वृद्धि दर बहुत अच्छी है। सूकर की देशी प्रजाति के रूप में घुंगरू सूअर को सबसे पहले पश्चिम बंगाल में काफी लोकप्रिय पाया गया, क्योंकि इसे पालने के लिए कम से कम प्रयास करने पड़ते हैं और यह प्रचुरता में प्रजनन करता है। सूकर की इस संकर नस्ल/प्रजाति से उच्च गुणवत्ता वाले मांस की प्राप्ति होती है और इनका आहार कृषि कार्य में उत्पन्न बेकार पदार्थ और रसोई से निकले अपशिष्ट पदार्थ होते हैं।

घुंगरू सूकर प्रायः काले रंग के और बुल डॉग की तरह विशेष चेहरे वाले होते हैं। इसके 6-12 से बच्चे होते हैं जिनका वजन जन्म के समय 1.0 kg तथा परिपक्व अवस्था में 7.0 – 10.0 kg होता है। नर तथा मादा दोनों ही शांत प्रवृत्ति के होते हैं और उन्हें संभालना आसान होता है।

सुअरों के लिए आवास की व्यवस्था

सुअरों के आवास साफ सुथरे तथा हवादार होना चाहिए l भिन्न- भिन्न उम्र के सुअर के लिए अलग – अलग कमरा होना चाहिए। ये इस प्रकार हैं –

क) प्रसूति सुअर आवास

यह कमरा साधारणत: 10 फीट लम्बा और 8 फीट चौड़ा होना चाहिए तथा इस कमरे से लगे इसके दुगुनी क्षेत्रफल का एक खुला स्थान होना चाहिए। बच्चे साधारणत: दो महीने तक माँ के साथ रहते हैं। करीब 4 सप्ताह तक वे माँ के दूध पर रहते हैं। इस की पश्चात वे थोड़ा खाना आरंभ कर देते हैं। अत: एक माह बाद उन्हें बच्चों के लिए बनाया गया इस बात ध्यान रखना चाहिए। ताकि उनकी वृद्धि तेजी से हो सके। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सुअरी बच्चे के खाना को न सके। इस तरह कमरे के कोने को तार के छड़ से घेर कर आसानी से बनाया जाता है। जाड़े के दिनों में गर्मी की व्यवस्था बच्चों केलिए आवश्यक है। प्रसूति सुअरी के गृह में दिवार के चारों ओर दिवार से 9 इंच अलग तथा जमीन से 9 इंच ऊपर एक लोहे या काठ की 3 इंच से 4 इंच मोटी बल्ली की रूफ बनी होती है, जिसे गार्ड रेल कहते हैं। छोटे-छोटे सुअर बचे अपनी माँ के शरीर से दब कर अक्सर मरते हैं, जिसके बचाव के लिए यह गार्ड रेल बनाना आवश्यक होता है।

ख) गाभिन सुअरी के लिए आवास

इन घरों ने वैसी सुअरी को रखना चाहिए, जो पाल खा चुकी हो। अन्य सुअरी के बीच रहने से आपस में लड़ने या अन्य कारणों से गाभिन सुअरी को चोट पहुँचने की आंशका रहती है जिससे उनके गर्भ को नुकसान हो सकता है। प्रत्येक कमरे में 3-4 सुअरी को आसानी से रखा जा सकता है। प्रत्येक गाभिन सुअरी को बैठने या सोने के लिए कम से कम 10-12 वर्गफीट स्थान देना चाहिए। रहने के कमरे में ही उसके खाने पीने के लिए नाद होना चाहिए तथा उस कमरे से लगें उसके घूमने के लिए एक खुला स्थान होना चाहिए।

ग) विसूखी सुअरी के लिए आवास

जो सुअरी पाल नहीं खाई हो या कूंआरी सुअरी को ऐसे मकान में रखा जाना चाहिए। प्रत्येक कमरे में 3-4 सुअरी तक रखी जा सकती है। गाभिन सुअरी घर के समान ही इसमें भी खाने पीने के लिए नाद एवं घूमने के लिए स्थान होना चाहिए। प्रत्येक सुअरी के सोने या बैठने के लिए कम से कम 10-12 वर्गफीट स्थान देना चाहिए।

घ) नर सुअर के लिए आवास

नर सुअर जो प्रजनन के काम आता है उन्हें सुअरी से अलग कमरे में रखना चाहिए। प्रत्येक कमरे में केवल एक नर सुअर रखा जाना चाहिए। एक से ज्यादा एक साथ रहने आपस में लड़ने लगते हैं एवं दूसरों का खाना खाने की कोशिश करते हैं नर सुअरों के लिए 10 फीट। रहने के कमरे में X 8 फीट स्थान देना चाहिए। रहने के कमरे में खाने पीने के लिए नाद एवं घूमने के लिए कमरे से लगा खुला स्थान जोना चाहिए। ऐसे नाद का माप 6 X4 X3 X4' होना चाहिए। ऐसा नाद उपर्युक्त सभी प्रकार के घरों में होना लाभप्रद होगा।

ङ) बढ़ रहे बच्चों के लिए आवास

दो माह के बाद साधारण बच्चे माँ से अलग कर दिए जाते हैं एवं अलग कर पाले जाते हैं। 4 माह के उम्र में नर एवं मादा बच्चों को अलग –अलग कर दिया जाता है। एक उम्र के बच्चों को एक साथ रखना अच्छा होता है। ऐसा करने से बच्चे को समान रूप से आहार मिलता है एवं समान रूप बढ़ते हैं। प्रत्येक बच्चे के लिए औसतन 3X4' स्थान होना चाहिए तथा रात में उन्हें सावधानी में कमरे में बंद कर देना चाहिए।

सुअरों के लिए आहार

ऐसा देखा गया है कि पूरे खर्च का 75 प्रतिशत खर्च उसके खाने पर होता है। सुअर के जीवन के प्रत्येक पहलू पर खाद्य संबंधी आवश्यकता अलग- अलग होती है। बढ़ते हुए बच्चों एवं प्रसूति सुअरों को प्रोटीन की अधिक मात्रा आवश्यक होती है अत: उनके भोजन में प्रोटीन की अधिक मात्रा 19 प्रतिशत या उससे अधिक ही रखी जाती है।

खाने में मकई, मूंगफली कि खल्ली, गेंहू के चोकर, मछली का चूरा, खनिज लवण, विटामिन एवं नमक का मिश्रण दिया जाता है। इसके मिश्रण को प्रारंभिक आहार, बढ़ोतरी आहार प्रजनन आहार में जरूरत के अनुसार बढ़ाया आहार में जरूरत के अनुसार बढ़ाया – घटाया जाता। जंगल में बहुत से फल वृक्ष जैसे – गुलर, महूआ पाये जाते है। गुलर फल पौष्टिक तत्व हैं। इसे सूखाकर रखने पर इसे बाद में भी खिलाया जा सकता है। सखूआ बीज, आम गुठली एवं जामुन का बीज भी सुअर अच्छी तरह खाते हैं। अमरुद एवं केंदू भी सोअर बड़ी चाव से खाते हैं। माड़ एवं हडिया का सीठा जिसे फेंक देते हैं, सुअरों को अच्छी तरह खिलाया जा सकता है।

सूकरों का आहार जन्म के एक पखवारे बाद शुरू हो जाता है। माँ के दूध के साथ-साथ छौनों (पिगलेट) को सूखा ठोस आहार दिया जाता है, जिसे क्रिप राशन कहते हैं। दो महीने के बाद बढ़ते हुए सूकरों को ग्रोवर राशन एवं वयस्क सूकरों को फिनिशर राशन दिया जाता है।सूकरो के दाने में मिक्चर-मिनरल्स चिलेटेड ग्रोमिन फोर्ट और इम्यून बुस्टर प्री-मिक्स मिला कर निम्नलिखित तरीके से दाना तैयार किया जा सकता हैं ।अलग-अलग किस्म के राशन को तैयार करने के लिए निम्नलिखित दाना मिश्रण का इस्तेमाल कर सकते है

सामग्री	क्रिप राशन	ग्रोअर राशन	फिनिशर राशन
मकई	60 भाग	64 भाग	60 भाग
बादाम खली	20 भाग	15 भाग	10 भाग
चोकर	10 भाग	12.5 भाग	24.5 भाग
मछली चूर्ण	8 भाग	6 भाग	3 भाग
लवण मिश्रण	1.5 भाग	2.5 भाग	2.5 भाग
नमक	0.5 भाग	0 भाग	0 भाग
कुल	100 भाग	100 भाग	100 भाग

सूकर के दैनिक आहार की मात्रा

- **ग्रोअर सूकर (26 से 45 किलो तक) :** प्रतिदिन शरीर वजन का 4 प्रतिशत अथवा 1.5 से 2.0 किलो दाना मिश्रण।
- **ग्रोअर सूकर (वजन 12 से 25 किलो तक) :** प्रतिदिन शरीर वजन का 6 प्रतिशत अथवा 1 से 1.5 किलो ग्राम दाना मिश्रण।
- **फिनसर पिगः** 2.5 किलो दाना मिश्रण।
- **प्रजनन हेतु नर सूकरः** 3.0 किलो।
- **गाभिन सूकरीः** 3.0 किलो।
- **दुधारू सूकरी:** 3.0 किलो और दूध पीने वाले प्रति बच्चे 200 ग्राम की दर से अतिरिक्त दाना मिश्रण। अधिकतम 5.0 किलो।
- दाना मिश्रण को सुबह और अपराह्न में दो बराबर हिस्से में बाँट कर खिलाना चाहिए।
- गर्भवती एवं दूध देती सूकरियों को भी फिनिशर राशन ही दिया जाता है।

प्रजनन

नर सुअर 8-9 महीनों में पाल देने लायक जो जाते हैं। लेकिन स्वास्थ ध्यान में रखते हुए एक साल के बाद ही इसे प्रजनन के काम में लाना चाहिए। सप्ताह में 3-4 बार इससे प्रजनन काम लेना चाहिए। मादा सुअर भी करीब एक साल में गर्भ धारण करने लायक होती है।

बीमारियों का रोकथाम

पशुपालन व्यवसाय में बीमारियों की रोकथाम एक बहुत ही प्रमुख विषय है। इस पर समुचित ध्यान नहीं देने से हमें समुचित फायदा नहीं मिल सकता है। रोगों का पूर्व उपचार करना बीमारी के बाद उपचार कराने से हमेशा अच्छा होता है। इस प्रकार स्वस्थ शरीर पर छोटी मोटी बिमारियों का दावा नहीं लग पाता। यदि सुअरों के रहने का स्थान साफ सुथरा हो, साफ पानी एवं पौष्टिक आहार दिया जाए तब उत्पादन क्षमता तो बढ़ती ही है। साथ ही साथ बीमारी के रूप में आने वाले परेशानी से बचा जा सकता है।

संक्रामक रोग

क) आक्रांत या संदेहात्मक सुअर की जमात रूप से अलग कर देना चाहिए। वहाँ चारा एवं पानी का उत्तम प्रबंध होना आवश्यक है। इसके बाद पशु चिकित्सा के सलाह पर रोक थाम का उपाय करना चाहिए।

ख) रोगी पशु की देखभाल करने वाले व्यक्ति को हाथ पैर जन्तूनाशक दवाई से धोकर स्वस्थ पशु के पास जाना चाहिए।

ग) जिस घर में रोगी पशु रहे उसके सफाई नियमित रूप से डी. डी. टी. या फिनाईल से करना चाहिए।

घ) रोगी प्शूओन्न के मलमूत्र में दूषित कीटाणु रहते हैं। अत: गर्म रख या जन्तु नाशक दवा से मलमूत्र में रहने वाले कीटाणु को नष्ट करना चाहिए। अगर कोई पशु संक्रामक रोग से मर जाए तो उसकी लाश को गढ़े में अच्छी तरह गाड़ना चाहिए। गाड़ने के पहले लाश पर तथा गढ़े में चूना एवं ब्लीचिंग पाउडर भर देना चाहिए जिससे रोग न फ़ैल सके।

सुअरों के कुछ संक्रामक रोग निम्नलिखित हैं

क) सूकर ज्वर

इसमें तेज बुखार, तन्द्र, कै और दस्त का होना, साँस लेने में कठिनाई होना, शरीर पर लाला तथा पीले धब्बे निकाल आना इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। समय-समय पर टीका लगवा कर इस बीमारी से बचा जा सकता है।

ख) सूकर चेचक

बुखार होना, सुस्त पड़ जाना, भूख न लगना, तथा कान, गर्दन एवं शरीर के अन्य भागों पर फफोला पड़ जाना, रोगी सुअरों का धीरे धीरे चलना, तथा कभी-कभी उसके बाल खड़े हो जाना बीमारी के मुख्य लक्षण है। टीका लगवाकर भी इस बीमारी से बचा जा सकता है।

ग) खुर मुंह पका

बुखार हो जाना, खुर एवं मुंह में छोटे-छोटे घाव हो जाना, सुअर का लंगड़ा का चलना इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। मुंह में छाले पड़ जाने के कारण खाने में तकलीफ होती है तथा सुअर भूख से मर जाता है।

खुर के घावों पर फिनाईल मिला हुआ पानी लगाना चाहिए तथा नीम की पत्ती लगाना लाभदायक होता है। टीका लगवाने से यह बीमारी भी जानवरों के पास नहीं पहुँच पाती है।

घ) एनये पील्ही ज्वर

इस रोग में ज्वर बढ़ जाता है। नाड़ी तेज जो जाती है। हाथ पैर ठंडे पड़ जाते हैं। पशु अचानक मर जाता है। पेशाब में भी रक्त आता है। इस रोग में सुअर के गले में सृजन हो जाती का भी टीका होता है।

ङ) एरी सीपलेस

तेज बुखार, खाल पर छाले पड़ना, कान लाल हो जाना तथा दस्त होना इस बीमारी को मुख्य लक्षण हैं। रोगी सुअर को निमानिया का खतरा हमेशा रहता है। रोग निरोधक टीका लगवाकर इस बीमारी से बचा जा सकता है।

च) यक्ष्मा

रोगी सुअर के किसी अंग में गिल्टी फूल जाती है जो बाद में चलकर फूट जाता है तथा उससे मवाद निकलता है। इसके अलावे रोगी सुअर को बुखार भी आ जाता है। इस सुअर में तपेदिक के लक्षण होने लगते हैं। उन्हें मार डाल जाए तथा उसकी लाश में चूना या ब्लीचिंग पाउडर छिड़क कर गाड़ किया जाए।

छ) पेचिस

रोगी सुअर सुस्त होकर हर क्षण लेटे रहना चाहता है। उसे थोड़ा सा बुखार हो जाता है तथा तेजी से दुबला होने लगता है। हल्के सा पाच्य भोजन तथा साफ पानी देना अति आवश्यक है। रोगी सुअर को अलग- अलग रखना तथा पेशाब पैखाना तुरंत साफ कर देना अति आवश्यक है।

परजीवी जय एवं पोषाहार संबंधी रोग

सुअरों में ढील अधिक पायी जाती है। जिसका इलाज गैमक्सीन के छिड़काव से किया जा सकता है। सुअर के गृह के दरारों एवं दीवारों पर भी इसका छिड़काव करना चाहिए।

सुअरों में खौरा नामक बीमारी अधिक होता है जिसके कारण दीवालों में सुअर अपने को रगड़ते रहता है। अत: इसके बचाव के लिए सुअर गृह से सटे, घूमने के स्थान पर एक खम्भा गाड़ कर कोई बोरा इत्यादि लपेटकर उसे गंधक से बने दवा से भिगो कर रख देनी चाहिए। ताकि उसमें सुअर अपने को रगड़े तथा खौरा से मुक्त हो जाए।

सुअर के पेट तथा आंत में रहने वाले परोपजीवी जीवों को मारने के लिए प्रत्येक माह पशु चिकित्सक की सलाह से परोपजीवी मारक दवा पिलाना चाहिए। अन्यथा यह परोपजीवी हमारे लाभ में बहुत बड़े बाधक सिद्ध होगें।

पक्का फर्श पर रहने वाली सुअरी जब बच्चा देती है तो उसके बच्चे में लौह तत्व की कमी अक्सर पाई जाती है। इस बचाव के लिए प्रत्येक प्रसव गृह के एक कोने में टोकरी साफ मिट्टी में हरा कशिस मिला कर रख देना चाहिए सुअर बच्चे इसे कोड़ कर लौह तत्व चाट सकें।

सूअर पालन को सफल व्यवसाय के रूप में बनाने के लिए कुछ विशेष ध्यान देने योग्य बातें निम्नलिखित है -

1. प्रसूति सुअर से बच्चों को उनके जरूरत के अनुसार दूध मिल पाता है या नहीं अगर तो दूध पिलाने की व्यवस्था उनके लिए अलग से करना चाहिए। अन्यथा बच्चे भूख से मर जाएंगें।

2. नवजात बच्चों के नाभि में आयोडीन टिंचर लगा देना चाहिए।

3. जन्म के 2 दिन के बाद बच्चों को इन्फेरोन की सूई लगा देनी चाहिए।

4. सुअरों का निरिक्षण 24 घंटो में कम से कम दो बाद अवश्य करना चाहिए।

5. कमजोर सुअर के लिए भोजन की अलग व्यवस्था करनी चाहिए।

6. आवास की सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

7. प्रत्येक सुअर बच्चा या बड़ा भली भांति खाना खा सके, इसकी समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

8. एक बड़े नर सुअर के लिए दिन भर के के लिए 3-4 किलो खाने की व्यवस्था होना चाहिए।

9. एक बार में मादा सुअर 14 से 16 बच्चे दे सकती है अगर उचित व्यवस्था की जाए तो एक मादा सुअरी साल में बार बच्चा दे सकती है।

10. सुकर ज्वर एवं खुर मुंह पका का का टीका वर्ष में 1 बार जरूर लगा लेना चाहिए।

11. बच्चों को अलग करने के 3-4 दिन के अंतर में ही सुअरी गर्भ हो जाती है और यदि सुअरी स्वस्थ हालर में हो तो उससे साल में 2 बार बच्चा लेने के उद्देश्य से तुरंत पाल दिला देना चाहिए।

12. सूअरियों नका औसतन 12, 14 बाट (स्तन) होते हैं। अत: प्रत्येक स्तन को पीला कर इतनी ही संख्या में बच्चों को भली भांति पालपोस सकती है। सूअरियों को आगे की ओर स्तन में दूध का प्रवाह बहुधा पीछे वाले स्तन से अहिक होता है। अत; आगे का स्तन पीने वाला बच्चा अधिक स्वस्थ होता है। यदि पीछे का स्तन पीने वाला बच्चा कमजोर होता जा रहा है तो यह प्रयास करना चाहिए कि 2-3 दिन तक आगे वाला बात दूध पीने के समय पकड़वा दिया जाय ताकि वह उसे पीना शुरू कर दे।

इस प्रकार वैज्ञानिक तरीके से सूकर पालन करने से अच्छा मुनाफा कमा कर जीविकोपार्जन किया जा सकता है।